Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 08, No. 01, January, 2018, pp. 577-578

# Hkkjrh; ykd lxhr dk lkekftd lnHk

डॉ. प्रभा बजाज*

संस्कृति के निर्माण में सामाजिक तत्वों की भूमिका का प्रमुख स्थान रहा है। संस्कृति का सम्बन्ध मूलतः समाज से ही होता है। तथा समाज से ही संस्कृति की झलक मिलती है। समाज का क्षेत्र व्यापक होने से इसके तत्व भी व्यापक तथा विस्तार लिये हुए है। समाज की लगभग सभी घटनाओं का वर्णन इसमें निहित है। सामाजिक रीति–रिवाज, संस्कार, पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलू तथा सम्बन्ध संदर्भ इत्यादि इसके प्रमुख अंग कहे जा सकते हैं। भारतीय लोक संगीत में भी इन सामाजिक तत्वों की उपलब्धता तथा चित्रण सजीव रूप से दृष्टिगोचर होती है। यहाँ के लोक संगीत लाला लाजपतराय के उस कथन की सत्यता को उजागर करते हैं जिसमें उन्होंने यह कहा था कि ''लोक गीतों में सामाजिक तथा नैतिक आदर्शों का स्पष्ट रूप से उद्घाटन प्राप्त होता है। अतः ये लोकगीत उन तिजोरियों की तरह हैं जो इन आदर्शों को अपने आप में समाहित किये हुए हैं।''[1]

भारतीय संस्कृति के सम्पूर्ण तथ्य लोक में इतने रच–बस गये हैं कि उन तत्वों को लोक से अलग करना उनकी प्राणवतता को छीन लेना है। जन मानस अपनी सभी प्रकार की भावनाओं की अभिव्यक्ति चाहे वह प्रसन्नता का अवसर हो या विषाद का कटु अनुभव अथवा फिर जन आवेश हो, लोकगीत के माध्यम से करता है। यही लोकगीत वाद्य और लोक नृत्यों के साथ मिलकर एक अद्भुत लोक संगीत को जन्म देता है। लोक वाद्य और लोक नृत्यों को विषयांतर के भय से छोड़ दें तो लोकगीत ही हमारे संस्कृति के संवाहक है, एवं संस्कृति के कभी न सूखने वाले स्त्रोत के रूप में दिखाई देते हैं।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को उन्नायक तत्वों में प्रमुख माना है। संस्कार का अर्थ है– पवित्रीकरण, अर्थात् वह क्रिया जिसके करने से मनुष्य पवित्र हो जाता है। पवित्रता के लिये ये संस्कार जन्म से पूर्व ही अनुष्ठित होते हैं।[2] गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक सोलह विभिन्न संस्कार माने गये हैं। जिनमें से जन्म, विवाह, तथा मृत्यु प्रमुख हैं, ''मनुष्य के जीवन में मुख्य प्रभावशाली ये तीन ही घटना हैं। इन तीनों से मानव जाति की सभी संभावनाएँ ओत–प्रोत हैं। वह इन घटनाओं की उपेक्षा किसी भी देश अथवा परिस्थिति में नहीं कर सकता है। इसी से अधिकांश लोकगीत के वर्ण्य विषय सम्बन्धित है।''[3]

उपर्युक्त कथन की पुष्टि डॉ. श्यामचरण दुबे के इस कथन से की जा सकती है– ''मानव की प्रायः प्रत्येक संस्कृति में व्यक्ति के जीवन के विभिन्न संक्रमण कालों का विशेष महत्व होता है। जन्म, विवाह एवं मरण इस प्रकार तीन मुख्य स्थितियाँ हैं। जिनके आस–पास मानव समूह विश्वासों रीति–रिवाजों और व्यवहार प्रकारों का एक ऐसा

---

* असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, कानोडिया पी.जी.महिला महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

1 दिनकर, डॉ. रामधारी सिंह – संस्कृति के चार अध्याय पृ.सं. 653

2 The real history of the country and its moral and social ideals are so much looked up in these folk songs – Lala Lajpat Rai (adopted from Kavita Komudi by Tripathi) Part-5, Page-77.

3 शर्मा, डॉ. मदनलाल – राजस्थानी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृ.सं. 26

जटिल ताना–बाना बुन लेता है कि उनके वास्तविक स्वरूप को समझे बिना उस संस्कृति का पूर्ण चित्र प्राप्त ही नहीं किया जा सकता।''[4]

भारत में प्रत्येक संस्कारों पर विशेष रूप से प्रचलित गीत हमारे समाज में दिखाई देते हैं। पुत्र जन्मोत्सव मनाने की प्रथा अन्य स्थानों की तरह यहाँ पर भी काफी धूम–धाम से प्रचलित है। गर्भाधान से लेकर यज्ञोपवीत संस्कार तक के गीत इसके अन्तर्गत आते हैं। विवाह संस्कार विषयक गीतों में सगाई से लेकर बेटी की विदाई तथा वधु के गृह प्रवेश तक के गीतों एवं मनुष्य जीवन के अन्तिम संस्कार–मृत्यु संस्कार विषय के गीत भी सम्पूर्ण भारत में प्राप्त होते हैं। अवसरानुकूल गाये जाने वाले इन विविध लोकगीतों में संस्कृति का सहज रूप में प्रकटीकरण देखा जा सकता है।

यदि भारत में पारिवारिक संदर्भ में गाये जाने वाले लोकगीतों की बात करें तो लोक जीवन और लोक संस्कृति से जुड़ा होने के कारण आत्मानुभूति की सम्वेदना, सरसता की विद्यमान्यता से लोकसंगीत का प्रभाव अलग ही दिखलाई पड़ता है। लोक जीवन और संस्कृति का पूरा वैभव इनमें प्रतिबिम्बित होता है। सम्पूर्ण भारत का लोक संगीत भी इस विचार से अनूठा है।

भारत वर्ष कृषि प्रधान देश रहा है। इन दोनों के लिए ही एक से अधिक आदमियों की आवश्यकता होती है। सम्भवतः इसी कारण यहाँ संयुक्त परिवारों की परम्परा रही है। चूल्हे भले ही अलग–अलग बन गये हो, परन्तु कृषि और पशुओं के कार्यों में परस्पर सहयोग और साझे की व्यवसायी ही देखी जाती है। इसी कारण संयुक्त परिवार व्यवस्था में एक ओर जहाँ ऐसे सम्बन्ध पोषित होते हैं, जिनका आधार सहज स्नेह तथा शाश्वत अपनत्व होता है, वहीं दूसरी ओर परस्पर व्यंग्य, कटाक्ष, स्वार्थ, आलस और अहंकार के कारण इनके अपनत्व में दरार पड़ जाती है। ऐसे भी सम्बन्ध होते हैं पहले प्रकार के स्नेहिल, प्रेममय और वात्सल्य पूर्ण सम्बन्धों में पिता–पुत्र, पिता–पुत्री, माता–पुत्र, माता–पुत्री, भाई–बहन, पति–पत्नि एवं देवर–भाभी आदि के सम्बन्ध हैं। दूसरी तरह के सम्बन्धों में परस्पर कटुता और तनाव की स्थिति बनी रहती है। जैसे– सास–बहू, ननद–भाभी, देवरानी–जिठानी आदि के सम्बन्ध। सांस्कृतिक और अन्य अवसरों पर एवं ऋतु परक लोकगीतों में इनका यथार्थ यथावत रूप देखा जा सकता है। नीम और मिश्री का कड़वापन और मिठास इन पारिवारिक सम्बन्धों की निजी विशेषता है यही भारतीय लोकगीतों में रची बसी है।

**lUnHk ग्रन्थ सूची**


- 1 दिनकर, डॉ. रामधारी सिंह – संस्कृति के चार अध्याय पृ.सं. 653
- 2 The real history of the country and its moral and social ideals are so much looked up in these folk songs – Lala Lajpat Rai (adopted from Kavita Komudi by Tripathi) Part-5, Page-77.
- 3 शर्मा, डॉ. मदनलाल – राजस्थानी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृ.सं. 26
- 4 गुप्ता, डॉ. सत्या – खड़ी बोली का लोक साहित्य, पृ.सं. 30
- Catherine Servan-Schreiber, « Indian Folk Music and 'Tropical Body Language': The Case of Mauritian Chutney », *South Asia Multidisciplinary Academic Journal* [Online], Free-Standing Articles, Online since 24 January 2011, connection on 08 January 2018.
- URL : http://journals.openedition.org/samaj/3111


[4] गुप्ता, डॉ. सत्या – खड़ी बोली का लोक साहित्य, पृ.सं. 30